अवतार की यात्रा

सिद्धी स्वरूप सूत्र - सेट 2

सूत्रों का प्रयोग कैसे करें?

अवतार की यात्रा में प्रस्तुत सूत्र मुरलीयों से निकाले गए हैं और हमें सिद्धी स्वरूप बनाने के उद्देश्य से रचे गऐ हैं । प्रत्येक सूत्र को प्रारम्भ करने से पूर्व स्वयं पर संदेह करने की मंशा का त्याग कर दें । आरम्भ करने के लिए बापदादा की मुरली से यह उपयुक्त है: "तो आज, आप बापदाद सिद्धी स्वरूप बच्चों का चयन कर रहे हैं । इनकी यादगार मूर्ति आज भी बहुत सी आत्माओं को कई प्रकार की सिद्धी पाने में मदद कर रहीं हैं ।"

प्रत्येक सूत्र में एक अभ्यास घटक (भाग) है और एक प्राप्ति घटक है । अभ्यास घटक के तीन पहलू हैं । सबसे पहले क्रम अनुसार इस त्रय के पहले घटक का अभ्यास करें फिर दूसरे का उसके बाद तीसरे का । जब आप इस त्रय का समग्रता और क्रम से अभ्यास करते रहेंगे तो इससे संघटित प्राप्ति का अनुभव कर सकेंगे ।

हम सलाह देते हैं कि प्रत्येक त्रय का आप 108 बार अभ्यास और अनुभव करें । ये 108 बार आप सुबह 30 मिनट, शाम को 30 मिनट, ट्रैफिक कन्ट्रोल के समय, भोजन के समय, चलते-फिरते या अपनी गति से कर सकते हैं । आपके पास एक सूत्र एक या दो दिनों तक 108 बार का अभ्यास पूर्ण करने की स्वतन्त्रता है ।

15 और 16 जनवरी, 2016 के लिए

मैं अन्तर्तमुखी होकर एकान्त में नीचे दिये गऐ सूत्र का प्रयोग और अनुभव करता हूँ । एकान्त का यह अर्थ नहीं है कि मैं लोगों से और बातों से दूर हो जाऊँ, इसका अर्थ है संसार में रहते और काम करते मैं एक शक्तिशाली स्थिति में स्थित हो जाऊँ । एकान्त का अर्थ है मैं अपने मन और बुद्धि को एक शक्तिशाली स्थिति में स्थित करूँ

सूत्र

(अशरीरी) + (देही अभिमानी) + (विदेही) = सुरक्षा

अभ्यास

अशरीरी अवस्था: मैं जागरूक हूँ कि मैं इस शरीर में एक आत्मा हूँ । मैं स्वयं को इस तन से न्यारा कर लेता हूँ ।

देही अभिमानी: इस शरीर में होते भी मैं आत्मा के असली गुणों के प्रति जागरूक हूँ । देही अभिमानी स्थिति में मेरे प्राकृतिक गुण उभर कर आते हैं । मैं अपने शरीर के अंगों को देही अभिमानी स्थिति में रहकर प्रयोग करता हूँ ।

निराकारी (विदेही): मैं असीम शांति में अपने शरीर से अलग हो जाता हूँ । मुझे मेरे स्थूल या सूक्ष्म शरीर का कोई भान नहीं है ।

प्राप्ति

सुरक्षा : दूसरे केवल आपके प्रकाशमय स्वरूप को ही देखें - इसी में आपकी सुरक्षा है! विप्लव के समय सुरक्षा का यही साधन है । शुरूआत में आपका यह अभ्यास था कि चलते-फिरते आपकी अवस्था से दूसरे यही सोचते थे कि उनके पास से प्रकाश गुज़र गया और उन्हें शरीर दिखाई नहीं देता था । इस अभ्यास से आप किसी भी प्रकार का पेपर पास कर सकते हो । अब, बहुत खराब समय आ रहा है, इसलिए, प्रकाशमय बनने का यह अभ्यास अब बढ़ाओ ।

अव्यकत बापदादा

17और 18 जनवरी, 2016 के लिए

मैं अन्र्तमुखी होकर एकान्त में नीचे दिये गऐ सूत्र का प्रयोग और अनुभव करता हूँ । एकान्त का यह अर्थ नहीं है कि मैं लोगों से और बातों से दूर हो जाऊँ, इसका अर्थ है संसार में रहते और काम करते मैं एक शक्तिशाली स्थिति में स्थित हो जाऊँ । एकान्त का अर्थ है मैं अपने मन और बुद्धि को एक शक्तिशाली स्थिति में स्थित करूँ ।

सूत्र

(निराकारी - विचारों में) + (निरंहकारी - शब्दों में) + (निर्विकारी - कर्मों में) = सत्यनिष्ठा

अभ्यास

निराकारी: मैं सम्पूर्ण रूप से इस बात से जागरूक हूँ कि मैं एक आत्मा हूँ । किसी भी भौतिक वस्तु की कोई जागरूकता नहीं है ।

निरंहकारी: मैं स्वयं को, व्यर्थ से मुक्त, बाबा के विनीत निमित्त सेवाधारी के रूप में स्थित करता हूँ ।

निर्विकारी: मेरे कर्म किसी भी विकार से दूषित नहीं हैं । मेरे कर्म श्रेष्ठ हैं और मेरी बुद्धि स्पष्ट और पवित्र है ।

प्राप्ति

सत्यनिष्ठा: निराकारी, निर्विकारी और निरंहकारी ये ब्रहमा बाबा के आखरी तीन शब्द थे । वे इस अभ्यास से नष्टोमोहा और स्मृति स्वरूप बन गए । मैं सम्पूर्ण शक्ति का स्वरूप बन जाता हूँ । मैं बाप को निरंतर सर्व सम्बन्धों के रूप में अनुभव हूँ और सभी सम्बन्धों में मैं सर्व प्राप्तियों का अनुभव करता हूँ । मैं सम्पूर्ण बनने के आनंद को अनुभव करता हूँ ।

19 और 20 जनवरी, 2016 के लिए

मैं अन्तर्मुखी होकर एकान्त में नीचे दिये गऐ सूत्र का प्रयोग और अनुभव करता हूँ । एकान्त का यह अर्थ नहीं है कि मैं लोगों से और बातों से दूर हो जाऊँ, इसका अर्थ है संसार में रहते और काम करते मैं एक शक्तिशाली स्थिति में स्थित हो जाऊँ । एकान्त का अर्थ है मैं अपने मन और बुद्धि को एक शक्तिशाली स्थिति में स्थित करूँ ।

सूत्र

(साक्षी) + (साथी) + (सकाश) = अचल

अभ्यास

साक्षी: मैं इस विशाल नाटक जिसे 'ड्रामा' कहते हैं, इसके प्रत्येक दृश्य और कलाकारों को साक्षी होकर देखता हूँ । आज मैं प्रत्येक कर्म साक्षी होकर करता हूँ ।

साथी: मैं सच्चे और अविनाशी साथी को साथ रखता हूँ । सांसारिक साथी तो मुझे धोखा भी दे सकता है, दुख भी दे सकता है, अपना मूड भी बदल सकता है, कभी रोऐगा कभी हँसेगा । लेकिन यह अलौकिक साथी हमेशा खुश रहेगा । यह मुझे हर धोखे से बचाऐगा । वह इतना बड़ा दाता है कि जो कुछ भी मैं उसे अर्पित करता हूँ उससे हज़ार गुणा वह मुझे बदले में देता है ।

सकाश: मैं सुख दाता की सन्तान हूँ और इसलिए मैं हर आत्मा को अपनी वृत्ति से सुख देता हूँ । मैं मनसा सेवा करता हूँ और उन्हें शक्तिशाली सकाश देता हूँ ।

प्राप्ति

अचल: इस अभ्यास की छत्रछाया में मैं निर्भय और अटल बन जाता हूँ । विपल्व की स्थिति में मेरी अवस्था और भी अटल और श्रेष्ठ होती है । चाहे कोई कितना भी तंग क्यूँ न करे, बाबा की याद मेरा किला बन जाती है और मैं सुरक्षित रहता हूँ ।